- उपसंहार -

उपसंहार

हिन्दी साहित्य के बहुचर्चित साहित्यकार मणि मधुकरजी एक प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। वे मूलत: कवि हैं। कवि होने के साथ-साथ वह एक प्रयोगशील नाटककार भी हैं। उनका "रसगंधर्व" नाटक तो हिन्दी साहित्य में अपनी अमीट छाप छोड गया है। लेखक मूलत: कवि होने के कारण उनके उपन्यासों में तथा अन्य विधाओं में भी कविता की झलक दिखाई देती है। मणि मधुकरजी की जन्मभूमि राजस्थान है। राजस्थान उनकी जन्मभूमि होने के कारण वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज, त्यौहार, लोक-संस्कृति तथा राजस्थान में स्थित समस्याओं को अपनी रचनाओं में दर्शाया है। राजस्थान में जन्मे मणि मधुकरजी ने अपने जीवन का बहुत सा समय राजस्थान में बिताया, इसलिए राजस्थान उनकी जन्मभूमिही नहीं बल्कि कर्मभूमि भी है। मणि मधुकर एक बहुआयामी व्यक्तित्व है। हिन्दी साहित्य को उनका काफी योगदान रहा है। उन्होंने नाटक, कविता, उपन्यास, एकांकी, कहानी, रिपोर्ताज आदि अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। अनेक विधाओं में लिखनेवाले हिन्दी साहित्य में मणि मधुकरजी जैसे लेखक कम ही मात्रा में पाये जाते हैं। मणि मधुकर का सम्पूर्ण लेखन मानवीय यातना और संघर्ष का एक प्रामाणिक दस्तावेज है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मणि मधुकर एक प्रतिभाशाली लेखक हैं। उनकी प्रतिभा कारयत्री तथा भावयत्री प्रतिभा दोनों रूपों में उभर आयी है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्होंने अनेक विधाओं में लेखन किया है, जिसमें है - कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, एकांकी, संस्मरण आदि। मणि मधुकर का जन्म स्वातंत्र्यपूर्व काल में हुआ। जब स्वातंत्र्य मिला तब उनकी आयु चार-पाँच बरस की थी। तब से उन्होंने राजस्थान की स्थिति को देखा था तथा अनुभव किया था इसी अनुभूति तथा प्रतिभा के बल पर उन्होंने राजस्थानी

वातावरण समाज को अपनी रचनाओं में बन्द करने का प्रयास किया है। वे साहित्य सृजन में काफी सफलता पा चूके हैं। अत: सिध्द है कि वे एक ख्याति प्राप्त लेखक हैं।

द्वितीय अध्याय के अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष के रूप में हम कहते हैं इसमें अकाल-पीड़ित रोजी-रोटी की तलाश में भटकते विवश लोगों का चित्रण किया है। उनके चित्रण के साथ-साथ भारत-पाकिस्तान बँटवारे के कारण शुबो जैसे गैरमुल्की लोगों पर किए गये अन्याय-अत्याचार का भी वर्णन किया है। पूरी कथा नायक शुबो के इर्द-गिर्द मँडराती है। शुबो तथा जुगनी की मुख्य कथा है। इस मुख्य कथा को पुष्टि देने के लिए अनेक सहायक कथाओं का अन्तर्भाव प्रस्तुत उपन्यास में किया है। उनमें है पुष्पाबाई की कथा, रावता की कथा, सुवटी की कथा, बाशिया की कथा हरलो की कथा। कथानक में सहजता एवं रोचकता होने के कारण पाठक उपन्यास जिज्ञासावश पढ़ता चला जाता है। लेखक ने भ्रष्टाचार, अंधश्रध्दा राजनीतिक अव्यवस्था, बँटवारा, अकाल जैसी समस्याओं को चित्रित किया है। उपन्यास के नामकरण में प्रतीकात्मकता है। वह कवि अजैदान की कविता से प्रेरणा पाकर किया है। कुछ पात्र कवि अजैदान से प्रेरित है। जगह-जगह पर यथोचित राजस्थानी हिन्दी का प्रयोग किया है। इन सभी कारणों से उपन्यास की कथावस्तु अत्यन्त सुन्दर, प्रभावशाली, कौतुहलवर्धक एवं रोचक बन पड़ी हैं।

तृतीय अध्याय में निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मणि मधुकरजी कृत "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास में लेखक ने लगभग चालीस प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष पात्रों का चयन किया है। इन पात्रों में से शुबो इग्यारसीलाल, जुगनी और पुष्पाबाई प्रमुख पात्र हैं। इनके अलावा ठेकेदार बछराज, रावता, हरलो, बदरू मियाँ, सुवटी, अचली, आदि गौन पात्र

तथा अन्य पात्रों का समावेश किया है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक शुबो अकाल-पीड़ित सामान्य जनता का प्रतिनिधीत्व करता है। शुबो के व्यवहार में कुछ घटनाओं के कारण परिवर्तन आ जाता है। अत: शुबो परिवर्तनशील पात्र है। शुबो के इर्द-गिर्द पूरी कथा मँडराती है। आलोच्य उपन्यास की नायिका जुगनी के माध्यम से समझदार, प्रेरणादायी परिश्रमी एवं सामान्य भारतीय कृषक नारी का चित्रण लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ किया है। इग्यारसीलाल और पुष्पाबाई तथा रावता प्रस्तुत उपन्यास के दुष्ट पात्र हैं। इनके माध्यम से समाज में फैला भ्रष्टाचार, आतंक, अन्याय-अत्याचार, अश्लीलता, गुंडागर्दी, दंगा-फ़साद आदि प्रकार की गन्दगियों का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में भरमार दिखाई देती है। पात्रों की भरमार होने पर उपन्यास को समझाना बड़ा कठिण कार्य होता है। किन्तु "पत्तों की बिरादरी" में पात्रों की भरमार होने हुए भी कठिणाई महसूस नहीं होती। इस उपन्यास के पात्र तथ्य चरित्र-चित्रण में लेखक को काफी सफलता मिली है। हर एक पात्र अपनी-अपनी भूमिका निभाता है, अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। अत: हम कह सकते हैं कि मणि मधुकर कृत "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल बन गया है।

चतुर्थ अध्याय के निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि मणि मधुकरजी ने " पत्तों की बिरादरी" उपन्यास में संवाद योजना तथा भाषा-शैली में काफी सफलता पायी है। कथोपकथन के अंतर्गत उन्होंने व्याख्यात्मक, व्यावहारिक, नाटकीय, मार्मिक, हास्य-व्यंग्यात्मक, गम्भीर, अलंकारिक, कथोपकथन का आयोजन किया है। इसके अंतर्गत संक्षिप्त, चुटीले, मर्मस्पर्शी तथा नाटकीय संवादों का आयोजन किया है। तथा इसके साथ-

साथ भाषा शैली के अंतर्गत पात्रानुकूल भाषा, चित्रात्मक भाषा, भाषा में कहावते, मुहाँवरे, सूक्तियाँ, रूपक, अलंकार आदि का प्रयोग किया गया है। फिर भी कहीं-कहीं संवाद नीरस भी बन गये हैं। इस उपन्यास के संवाद कथानक को गतिशील बनाते हैं। इसमें कई शैलियों का प्रयोग भी किया गया है। इन सभी की वजह से इस उपन्यास के संवादों की सहजता में निखार आ गया है।

पंचम अध्याय के निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि मणि मधुकरजी सफल उपन्यासकार हैं। क्योंकि उपन्यास में जिन महत्त्वपूर्ण बातों का होना आवश्यक है व सभी बातें उनके उपन्यास मे है। इन बातों में से उपन्यास में उद्देश्य का होना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। मणि मधुकरजी ने प्रस्तुत उपन्यास में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया है। उन्होने राजस्थानी जनजीवन पर प्रकाश डाला है। तथा भारत-पाकिस्तान बँटवारे के दुष्परिणामों को चित्रित किया है और अकाल-पीड़ितों का चित्रण किया है। इन मुख्य उद्देश्यों के साथ-साथ राजनीतिक अव्यवस्था का पर्दाफाश करना, स्त्री-पुरूषों के अन्तर्बाह्य सम्बन्धो का परखना, प्रेम के विविध पहलुओं का चित्रण करना तथा श्रम के मूल्य की प्रतिष्ठापना करना आदि गौण उद्देश रहे हैं। मणि मधुकरजी प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश की पूर्ति में काफी सफलता पा चूके हैं।

प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है। अतः वह सार्थक बन पड़ा है। इसप्रकार यथार्थ के रंग में डूबोकर प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास सभी दृष्टि से सफल कहा जा सकता है।